अनवर सुहैल: चहल्लुम:

1

चहल्लुम

सफेद साड़ी पर आसमानी बार्डर।

सिर पर आंचल।

चेहरे पर वीरानी सी छाई।

आंखों पर ग़म के पनीले बादल...

सदाबहार अम्मी को इस ग़मज़दा रूप में देख जूही का दिल रो पड़ा।

अब्बू खुद तो सादा कपड़ा पहनते लेकिन अम्मी के कपड़ों के लिए वे खासे 'चूज़ी' थे। इसीलिए अम्मी की साडियां षोख़ रंग की होतीं। उनमें लाल-गुलाबी रंगों की डिज़ाईनें बनी हों तो बेहतर। बाकी हल्के रंगों का अब्बू मज़ाक उड़ाया करते-''डाॅक्टर, प्रोफेसरों वाला रंग घरेलू औरतों को कहां फबेगा।''

अम्मी की जिन कलाईयों में दर्जनों चूडियां खनखनाया करतीं वे सूनी हुईं।

मुस्लिमों में मंगल-सूत्र पहनने का चलन नहीं, लेकिन अम्मी हमेषा मंगल-सूत्र पहना करती थीं।

काली मोतियों और सोने से बने भारी-भरकम मंगलसूत्र के बगैर उनका गला कितना खाली लग रहा है।

अम्मी के लबों पर पान की लालिमा नहीं, कैसे बेरौनक हो रहे हैं होंठ!

वह खुद पान खाया करतीं और घर आए लोगों की खिदमत में पान पेष करती थीं।

अब्बू क्या गए अम्मी के पान का षौक़ भी छिन गया।
अब्बू क्या गए अम्मी की घर में कोई क़ीमत न रह गई।
अब्बू क्या गए उनका मान-सम्मान चला गया।
अनवर सुहैल: चहल्लुम: 2
अपने कमरे में दीवान पर तकिए के सहारा लेकर बैठी अम्मी, बच्चों की खुदगजर्ी भरी बातें सुन रही हैं।
उनके दाहिने कंधे का दर्द उभर आया है।
अम्मी ने जब अब्बू के इंतेकाल की ख़बर सुनी, बेहोष गिर पड़ी थीं। उसी से कंधे पर अंदरूनी चोट आ गई है। यदि कंधों की अच्छे से मालिष हो जाए तो कुछ राहत मिले। कंधे को हाथ से टटोलने पर ऐसा लगता है कि जोड़ से कंधा उखड़ गया है। कालॅर-बोन कुछ उठ सी गई है। उन्हें हड्डी के डाक्टॅर के पास ले जाना चाहिए था। उनका इलाज कराना था। दर्द कभी इतना अधिक बढ़ जाता है कि जान ही निकलने लगती है। अपने हाथों से वे कंधा सहलाते रहती हैं। लेकिन इस घर में किसे फुर्सत है कि उनके दुख-दर्द देखे। सभी अपने में मगन हैं। उखड़े-उखड़े और व्यस्त। घर में घुसते ही सबके माथे पर तनाव की लकीरें घर बना लेती हैं।
अब अपना दर्द वे किसे बताएं। उनकी छोटी-छोटी ज़िदों पर अपनी जान न्योछावर करने वाला तो अल्ला को प्यारा हो गया।
अब्बू को याद कर वह रोने लगीं।
इतनी लाचार, इतनी बेबस वह कभी न थीं। अम्मी यही सोचा करतीं कि षौहर के बिना बाकी का जीवन क्या ऐसे ही गुज़रेगा?
कोई नहीं उनकी सुध लेने वाला।
माना कि घर में षोक है, लेकिन सल्लू बेटे की बेगम को तो पता है कि सुबह से अब तक उनकी तीन-चार चाय चल जाती थी।
कैसे दिन आए कि अभी तक एक भी चाय नसीब नहीं हुई है।
किससे कहें, कहीं कोई उल्टी-सीधी बात न कह दे।
जब देखो तब सल्लू बेगम यही ताना देती कि अम्मी ज्यादा रोई नहीं।
कल रात मैके अपनी मां से फोन पर बहू बातें उन्होंने सुनी थीं-''ऐसी हालत में तो कितनी रो-रोके जान तक दे देती हैं। यहां तो बुढिया रोई ही नहीं।''
उधर दोनों बेटे खामखां की व्यस्तता दिखा कर साबित करते हैं कि वे कितने परेषान हैं।
सल्लू जब भी घर में घुसता है चेहरा लटका रहता है। उसके जिस्म से सिगरेट की बू आती है और मंुह में गुटका दबा रहता है।